موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 6

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त6

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के पचीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढाते हैं:

26.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह भलाई व अच्छाई एवं सुधार का आदेश देती है और बुराई एवं दंगा से रोकती है,अल्लाह का फरमान है:

(**وَتَعَاوَنُوا** عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى **وَلَا تَعَاوَنُوا** عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ)

अर्थात:सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता करो,तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:(न हानि पहुंचाना है और न हानि उठाना है)[2]।और फरमाया:(तुम में से कोई जब बुरी बात देखे तो चाहिए कि उसे

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अपने हाथ के द्वारा दूर करे,यदि इसकी शक्ति न हो तो अपनी जबान से और यदि इसकी भी शक्ति न हो तो अपने **ह्रदय** के द्वारा दूर करदे,यह ईमान का न्यूनतम श्रेणी है)[3]

27.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अपने अनुयायियों को अधिक से अधिक शरीअ़त का ज्ञान प्राप्त करने का आदेश देती है,जिससे आत्मा को जीवन मिलती है, **ह्रदयों** का सूधार होता है,उस पर दुनिया व आखिरत के सौभाग्य प्राप्त होते हैं और समाज वैचारिक विचलन व विनाशकारी विचारों से सुरक्षित रहता है,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु हलैहि वसल्लम को आदेश दियाः

(وقل رب زدني علما)

अर्थातःतथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार!मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

---

[2] इसे अह़मद(313/1)आदि ने इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अन्हुमा से वर्नण किया है और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है,ह़दीस संख्या(2865)।

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

[3] इसे मुस्लिम(49)ने वर्नण किया है।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(जिस व्यक्ति के साथ अल्लाह भलाई करना चाहता है तो उसे दीन की समझ प्रदान करता है)[4]

28.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह धरती को आबाद करने का आदेश देती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

(هو الذي جعل لكم الأرض ذلولا فامشوا في مناكبها وكلوا من رزقه وإليه النشور)

अर्थातःवही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती,तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका।और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः (هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ واستعمركم فيها)

अर्थातःउसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया और तुम को उस में बसा दिया।

अर्थात उस ने तुम्हें धरती पे पैदा किया और उसमें अपना उत्तराधिकारी बनाया,तुम पर आंतरिक एवं **बाह्य** उपकार किये,तुम्हें धरती पर शक्ति एवं प्रभुत्व प्रदान किया,तुम घर बनाते,पौधा उगाते,खेती करते और जिस चीज़ की चाहते हो बीज बोते हो और धरती से लाभान्वित होते हो।

[4] इसे बोखारी(71)और मुस्लिम(1037)ने मोआ़विया बिन(पुत्र)अबी सुफयान रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्नण किया है।

29.इस्लामो शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अपने पूर्व की शरीअ़तों को निरस्त करने वाली है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(وأنزلنا إليك الكتاب مصدقا لما بين يديه من الكتاب **ومهيمنا** عليه)

अर्थातःऔर(हे नबी)हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक(कुर्आन)उतार दी,जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है।

30.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह महिलो के अधिकार,उसके मान सम्मान,उसकी भावनाओं और आवश्यकताओं का ख्याल रखती है,अतः इस्लाम ने स्त्रो के लिए जिन अधिकारों की जमानत दी है,उनकी संख्या अस्सी(80)से अधिक है,यही कारण है कि(इस्लाम की दृष्टी में)मुसलमान महिला एक सम्मानित अस्तित्व है,अपने पति,संतान और समाज के लिए वरदान है,जबकि पूर्व एवं पश्चिम में महिला का सख्त अपमान हो रहा है,चाहे वह कनया हो,अथवा माता हो अथवा बूढ़ी हो,यदि वह युवती होती है तो कवल आनंद सामर्गी का एक माध्यम मानी जाती है,यदि बूढ़ि होती है तो वुद्धाश्रम की अतिथि बन कर रहती है,उन स्त्रियों के बीच मनोवैज्ञानिक दवाओं,नशीला पदार्थ,गर्भपात और आत्महत्या का जो सामान्य परंपरा है,उसकी तो बात ही न करें![5]

---

[5] लाभ के लिये देखें: «ثمانون مظهرا من مظاهر تكريم الإسلام للمرأة، وحفظ حقوقها، واحترام مشاعرها» ,लेखकःमाजिद बिन सोलेमान अर्रसी,यह पुस्तक इंटरनेट पर उपलब्ध है।

31.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके आदेश रब्बानी नीतियों पर आधारित है,चाहे उन आदेशों का संबंध प्रार्थनाओं से हो अथवा मामलों से,अथवा हुदूद(इस्लाम की ओर से निर्धारित सीमाएं)एवं क़ेसास(दंड)से,और चाहे हम उन नीतियों से अवगत हों अथवा न हों,वह अपने कार्यों एव कथनों में ह़कीम व बुद्धिमान है,और शरीअ़त और तक़दीर में ह़कीम व अवगत है।[6]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

32. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसकी भविष्वाणियां सत्य साबित होती हैं,अतः भविष्य की हर वह बात जिस की सूचना शरीअ़त ने दी,वह या तो घटित हो चुकी है यह घटित हो कर

---

[6] लाभ के लिये देखें:इब्नुल **क़य्यिम** की पुस्तक "أسرار الشريعة من إعلام الموقعين" ,संग्रह एवं प्रबन्धःमोसाइद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्सलमान,प्रकाशकःدار المسير

रहेगी,इसका एक उदाहरण यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजाशी की मृत्यु की सूचना उसी दिन दी जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी जब कि नजाशी ह़ब्शा में थे और आप नदीना में,उसके बाद आप ने उनकी गाएबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।[7]

सह़ी बोखारी में अनस से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौता के युद्ध के लिये सेना की एक इकाई भेजा,उनका सेनापति ज़ैद बिन ह़ारसा को बनाया और उन्हें यह वसीयत की कि यदि ज़ैद शहीद हो जाएं तो जाफर उनके सेनापति होंगे,यदि जाफर शहीद हो जाएं तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा उनके सेना प्रमुख होंगे,इसी बीच कि सह़ाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना में थे आप ने ज़ैद की मृत्यु की सूचना दी,फिर जाफर की और उसके बाद इब्ने रवाह़ा की मृत्यु की सूचना दी।जबकि आप मदीना ही में थे।[8]

जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर युद्ध से पहले बदर स्थान पर ठहरे तो आप ने मुश्रिकों के कुछ सरदारों की हत्या का स्थान सुनिश्चित रूप से बतलाई,अतः अनस बिन मालिक उ़मर बिन खत्ताब से वर्णन करते हैं किःरसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन पहले हमें बदर(में हत्या होन)वालों के गिरने का स्थान दिखा रहे थे,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमा रहे थेःइन्शा अल्लाह! कल अमुक की हत्या का स्थान यह होगा।तो ह़जरत उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हु ने कहाःउस हस्ती की शपथ जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि सवल्लम को सत्य के साथ भेजा!वे लोग उन स्थानों

[7] देखेंःसह़ी बोखारी(1245)और सह़ी मुस्लिम(951)रिवायतःअबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु।
[8] इसे बोखारी(1246)ने वर्नण किया है।

के किनारों से थोड़ा भी इधर उधर नहीं मरे थे जिन को अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निर्धारित किया था।[9]

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम आर उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

  (إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

  अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बडा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य।**
- हे हमार रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

[9] इसे मुस्लिम(2873)ने वर्नण किया है।

लेखकः
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादकः
फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी